टीबी पर ज़िम्मेदार और नीतिकारक पत्रकारिता

पत्रकारों के लिए एक संसाधन

टीबी जैसे स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों पर ज़िम्मेदार और नीतिकारक पत्रकारिता बेहद ज़रूरी है ताकि पढ़ने वालों को सही जानकारी मिले। टीबी पर रिपोर्टिंग ज़िम्मेदार तरीके से करने से रूढ़िवादी सोच (स्टीरियोटाइप) का अंत करने और लोगों तक सही और वास्तववादी सन्देश पहुँचाने में मदद होती है। इस दस्तावेज़ में कई ज़रूरी पहलू बताये गए हैं जो टीबी पर रिपोर्टिंग करते समय ध्यान में रखने चाहिए।

एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाइये। रोग के हर पहलू को प्रस्तुत करने की कोशिश कीजिये, खास तौर पर मानवीय पहलू को।

टीबी एक जटिल बीमारी है। इस रोग के पहलुओं पर रिपोर्टिंग करते वक़्त केवल पॉजिटिव केसों के आंकड़ों पर या टीबी से जुड़ी मृत्युओं के साथ-साथ सामाजिक, चिकित्सकीय, निजी या विज्ञान सम्बंधित, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक और बाकी सभी पहलुओं पर छानबीन करने की कोशिश कीजिये। यह ज़रूरी नहीं कि टीबी पर हर कहानी हमेशा दुखद हो। कुछ आशावादी केस स्टडीज़ या सरकारी या गैर-सरकारी (एन.जी.ओ) संस्थाओं द्वारा किये गए प्रयासों पर प्रकाश डालना भी अच्छा होता है।

उपयुक्त व समावेशी भाषा का उपयोग करें, अपमानजनक का नहीं ।

उपयुक्त भाषा का उपयोग करें जो समावेशी हो और "हम" और "वो" के बीच मुकाबले या फ़र्क की मानसिकता को और मज़बूत न बनायें। उदहारण के लिए, किसी को टीबी "जकड़" नहीं लेता है। टीबी लोगों को "हो" जाता है। "संदिघ्द" और "बाकीदार" जैसे शब्दों को विश्वभर में निंदनीय नज़र से देखे जाते हैं। लेकिन आप उपयुक्त ढंग से इन्हीं शब्दों को बदलकर अपने लेख में सही जानकारी पाठकों को दे सकते हैं। जैसे "बाकीदार" की जगह "फॉलो अप में खोए मरीज़" का इस्तेमाल किया जा सकता है।

गोपनीयता का आदर कीजिये। बिना ख़ास अनुमति के किसी टीबी मरीज़ की पहचान को प्रकाशित न करें।

दुर्भाग्यवश समाज में टीबी से जुड़ी कई भ्रांतियां और मिथ्याएँ हैं। कई लोग भेद-भाव के डर से इलाज नहीं कराते। जब आप किसी को उद्धृत करते हुए उनकी पहचान घोषित करते हैं, आपको जागरूक रहना चाहिए की इससे ये अपनी नौकरी या घर भी खो सकते हैं। बिना टीबी मरीज़ की ख़ास अनुमति के बिना पत्रकारों को उनकी पहचान का खुलासा नहीं करना चाहिए। अपनी ख़बर या कहानियों में मीडिया के लोगों को उन टीबी मरीज़ों की गोपनीयता बनाये रखने का प्रयास करना चाहिए जिनसे उन्होंने बात की है। अपनी कहानी को सन्दर्भ देने के लिए आप उनकी उम्र, बिना विस्तार किये निवास स्थान, व्यवसाय (बिना स्कूल, ऑफिस का नाम लिए) इत्यादि का ज़िक्र कर सकते हैं।

बच्चों में टीबी के बारे में लिखते वक़्त ख़ास सावधानी बरतें। इनकी पहचान प्रकाशित करना गैरकानूनी है।

टीबी से पीड़ित 18 से कम उम्र के बच्चे किशोर न्याय (देखभाल और सुरक्षा), अधिनियम 2015 (जो अब से जुवेनाइल जस्टिस एक्ट या जे.जे. एक्ट के नाम से जाना जाता है) के तहत देखभाल और सुरक्षा के लिए

वर्गीकृत माने जाते हैं। इस अधिनियम के तहत किसी भी मीडिया रिपोर्ट (टी.वी में या छपा हुआ) में किसी का भी नाम, पता, स्कूल या कोई और ऐसी जानकारी प्रकाशित नहीं कर सकते जिनसे इनकी पहचान संभव है। पत्रकारों को संवेदनशील रहना चाहिए कि बच्चे को अपनी बीमारी या उस बीमारी के असर के बारे में पता हो भी सकता है या नहीं भी।

आंकड़ों की व्याख्या करते समय ध्यान रखिये। विशेषज्ञों से बात कीजिये।

ये मत सोचिये कि आंकड़े अपने लिए खुद बोलते हैं। डेटा रिकॉर्ड करने के सरकारी तरीकों में आये बदलावों को ध्यान में रखिये। उदहारण के लिए, कुछ ऐसे जांच व टेस्ट हैं जो पहले रिपोर्ट नहीं किये जाते थे, लेकिन अब रिपोर्ट किये जाते हैं। अगर नए लैब/नैदानिक टेस्ट इस्तेमाल किये जा रहे हैं या अधिसूचना की नई नियमें लागू की गई हैं, उन्हें भी ध्यान में रखिये, जैसे, अगर सरकार ने निजी-क्षेत्र के लिए अधिसूचना देना अनिवार्य बना दिया है। अपने कहानी के दृष्टिकोण को चुनने से पहले, विशेषज्ञों के विचारों को गंभीरता से लेने में ही समझदारी है।

रूढ़िवादी सोच (स्टीरियोटाइप) को उखाड़ फ़ेंकने में मदद करें। टीबी से जुड़े मिथकों को बढ़ावा न दें।

टीबी जैसे जटिल रोग के बारे में पहले से ही कई गलतफेहमियां समाज में हैं, जैसे टीबी को छूत की बीमारी, या केवल गरीबों को होने वाली बीमारी माना जाना। जब खबरों या कहानियों में टीबी मरीज़ों का वर्णन ऐसे ही रूढ़िवादी सोच के अनुसार होता है, तो इससे लोगों के मन में गलतफहमियाँ और बढ़ जाती हैं। स्टीरियोटाइप तोड़ने से टीबी से जुड़े हुए भ्रांतियों को हटाने में मदद होगी। इसलिए अपनी लेख में यह बताना ज़रूरी है कि: टीबी किसी को भी हो सकता है, इसका इलाज पूरी तरह संभव है, और सही समय पर सही और पूरे इलाज से यह पूरी तरह ठीक हो सकता है। इसके कोई दीर्घकालिक नतीजे भी नहीं होते।

आज़ादी : विभिन्न हिस्सेदारों से स्वस्थ दूरी बनाये रखिये।

रिपोर्टिंग करते वक़्त, अलग-अलग खिलाड़ियों से दूरी बनाये रखना ज़रूरी है। इनमे सरकार, औषधीय उद्योग, निजी सेक्टर चिकित्सक, और गैर सरकारी या एन.जी.ओ सगंठन शामिल हैं। इन स्रोतों से भले ही आंकड़ें या जानकारी ली जा सकती है, मगर हमेशा ध्यान रखें कि आपकी कहानी पक्षपातपूर्ण न हो, और जहाँ तक हो सके विभिन्न दृष्टिकोणों को पेश करता हो। उदहारण के लिए, जब सरकारी अधिकारी दावा करते हैं कि कोई कार्यक्रम अच्छी तरह काम कर रहा है, मरीज़ों से भी बात करने में भलाई है यह जानने के लिए कि क्या प्रमुख हितकारी भी इससे सहमत हैं या नहीं। अगर महामारी की परिस्थिति आ जाये, तो सरकारी स्रोतों और आंकड़ों पर सवाल करना उचित है, जहाँ उनसे पूछा जाये कि स्थिति को संभालने के लिए किस तरह के प्रबंध किये जा रहे हैं।

टीबी पर ज़िम्मेदार और नीतिकारक पत्रकारिता: एक रीच प्रकाशन (V3, 2021)

This document was drafted by Ms Menaka Rao for REACH with support from the Lilly MDR-TB Partnership. The publication of this updated version is made possible through the ALLIES Project with support from the American People through the United States Agency for International Development (USAID). The contents of this document are the sole responsibility of REACH and do not necessarily reflect the views of USAID or the United States Government.

Websites: www.reachtbnetwork | www.media4tb.org